अक्टूबर, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 10 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग हिम फिल्म महोत्सव 2024 में सभा को संबोधित करते हुए।

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

अक्टूबर, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 10

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

तिब्बत की स्थिति पर सार्वजनिक सम्मेलन, जिसमें तिब्बत के जल संसाधनों से संबंधित मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

• ताइवान के भक्तों ने परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना की 1

• परम पावन दलाई लामा ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में गठबंधन की सफलता पर उमर अब्दुल्ला को बधाई दी 2

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने जापान के नए प्रधानमंत्री माननीय शिगेरू इशिबा को बधाई दी 3

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने लक्जमबर्ग का दौरा कर तिब्बत समर्थकों के साथ संबंधों को मजबूत किया 4

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ताइवान की पूर्व राष्ट्रपति साई इंग-वेन के साथ २८वें फोरम २००० में भाग लिया 5

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दिल्ली में 'तिब्बत के भविष्य की रूपरेखा' विषयक सेमिनार को संबोधित किया 6

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दो दिवसीय 'हिम फिल्म महोत्सव २०२४' के समापन सत्र में भाग लिया 7

• केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने महात्मा गांधी की १५५वीं जयंती मनाई 8

• आईसीटी जर्मनी के एक प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 9

• पेरिस में 'पार्लियामेंटरी यूरोप तिब्बत एडवोकेसी' जारी, प्रमुख नेताओं से मुलाकात 10

• भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में डीआईआईआर तिब्बत जागरुकता वार्ता का आयोजन 11

• नागपुर में तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक 12

समाचार -

• भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने समता सैनिक दल शिविर में तिब्बत पर जागरुकता सत्र का आयोजन किया 13

• टीपा कलाकारों ने २५वें हिमाचल प्रदेश वन क्रीड़ा एवं ड्यूटी सम्मेलन तथा कांगड़ा जिला कार्निवल में प्रस्तुति दी तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान की रिपोर्ट 14

• ताइपे स्थित तिब्बत कार्यालय के सचिव ने २०२४ इस्ट एशिया डेमोक्रेसी फोरम में भाग लिया 15

• बेंगलुरु में 'भारत-तिब्बत संबंध और भविष्य की चर्चा' पर संगोष्ठी आयोजित 16

• १५ देशों ने जारी अपने संयुक्त वक्तव्य में चीन से तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान में मानवाधिकारों के हनन पर ध्यान देने की मांग की 17

• चीनी संपर्क अधिकारी सांगये क्याब ने बर्लिन में चीन के लोकतंत्रीकरण पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया 18

• तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी कुंचोक मिग्मार ने टोंग-लेन हेल्थ बस सेवा के उद्घाटन के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू का स्वागत किया 19

• सीआरओ सावांग फुंट्सोक ने दिवाली की शुभकामनाएं देने के लिए शिमला में प्रमुख सरकारी कार्यालयों का शिष्टाचार दौरा किया 20

• तिब्बत, भिक्षु को वीचैट पर दलाई लामा की शिक्षाएं साझा करने पर १८ महीने की सजा 21

• चीनी न्यायालय ने ल्हासा पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो के खिलाफ तिब्बती अधिकार कार्यकर्ता गोन्पो क्यी के मुकदमे को खारिज कर दिया 22

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

23

• भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने तिब्बत पक्षधरता को मजबूत करने के लिए मुंबई में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया

◆ दलाईलामा से प्रेरित गांधी-मार्ग पर अग्रसर तिब्बती संघर्ष

हर वर्ष गांधी जयन्ती तिब्बती समुदाय के लिये एक महत्वपूर्ण उत्सव है। बौद्ध धर्मगुरु परमपावन दलाईलामा की प्रेरणा-प्रोत्साहन एवं आषीर्वाद से संचालित तिब्बती संघर्ष पूर्णतः शांतिप्रिय और अहिंसक है। स्वतंत्र देष तिब्बत पर साम्राज्यवादी चीन के अवैध आधिपत्य के बाद मार्च 1959 में दलाईलामा अपनी गुरुभूमि भारत आ गये थे। भारत में रहकर तिब्बती संघर्ष को जारी रखने के लिये उन्होंने शांति-अहिंसा की राह को चुना। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी इसी मार्ग पर चले। वे बराबर नरम विचार के रहे। अपनी आलोचनाओं के बावजूद वे गरम विचार के नहीं हुए तथा गरम विचार वालों को उन्होंने अपने नजदीक आने और टिकने नहीं दिया। वे मानते थे कि भारत की स्वतंत्रता एक पवित्र लक्ष्य है इसलिये इसकी प्राप्ति में सिर्फ पवित्र साधनों का उपयोग होना चाहिये। वे गरम विचार अर्थात् आंदोलन में हिंसा, हथियारों के प्रयोग तथा उग्र एवं कटु चिंतन के घोर विरोधी थे। वे मानते थे कि हमें सिर्फ पाप से घृणा करनी चाहिये, न कि पापी से। समझाने-बुझाने, प्रार्थना-सत्याग्रह करने तथा उपवास आदि अहिंसक तरीके अपनाने पर पापी का हृदय परिवर्तन हो जायेगा। उनका विष्वास था कि इसी से साम्राज्यवादी ब्रिटिष सरकार का हृदय परिवर्तन हो जायेगा और वह भारत को आजादी दे देगी। दलाईलामा तिब्बती संघर्ष में गांधी जी के इन्हीं विचारों के पक्षधर हैं। अभी 2 अक्टूबर, 2024 को भी तिब्बतियों ने उपनिवेषवादी चीन सरकार के विरूद्ध जारी अपने आंदोलन को शांति एवं अहिंसक बनाये रखने की फिर से शपथ ली है। भगवान् बुद्ध के उपदेषों में भी शांति-अहिंसा अपनाने पर बल दिया गया है। इस प्रकार बुद्ध एवं गांधी के विचारों से प्रभावित तिब्बती संघर्ष का शांतिपूर्ण एवं अहिंसक होना स्वाभाविक है।

आंदोलन की सफलता के लिये आवष्यक है कि सभी तिब्बत समर्थक संगठन एवं व्यक्ति सुव्यवस्थित रूप से इसमें साथ देते रहें। इसमें सर्वाधिक भूमिका भारत की है क्योंकि यह तिब्बत का पड़ोसी है। भारत-चीन सीमा सन् 1959 में अस्तित्व में आई। इसके पूर्व भारत-तिब्बत सीमा होती थी। भारतीय शांति, समृद्धि, सुरक्षा तथा स्वाभिमान की मजबूती के लिये तिब्बत समस्या का हल आवष्यक है। इसी तथ्य को भारत तिब्बत मैत्री संघ, बिहार में प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य एवं नालंदा जिला संयोजक अधिवक्ता कुमार राज मनोरंजन सिंह द्वारा अपने चुनावी घोषणापत्रों में प्रमुखता से सम्मिलित किया गया है। उन्होंने सन् 1995 में इस्लामपुर तथा सन् 2005 के फरवरी एवं नवंबर के हिलसा विधानसभा और सन् 1996 के नालंदा लोकसभा के अपने चुनावी घोषणापत्रों में तिब्बती संघर्ष को भारतीय हित में भरपूर सहयोग देने की अपील की थी। मनोरंजन सिंह का आह्वान है कि सभी राजनीतिक दल एवं राजनेता अपने चुनावी घोषणापत्रों में तिब्बती संघर्ष में समर्थन का संकल्प व्यक्त करें।

अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ाकर ही चीन को निर्वासित तिब्बत सरकार के साथ सार्थक वार्ता के लिये बाध्य किया जा सकता है। परतंत्र तिब्बत में मानवाधिकारों का घोर उल्लंघन जारी है। चीन सरकार तिब्बती पहचान मिटाने में लगी है। तिब्बती षिक्षा, संस्कृति, इतिहास, धरोहर तथा धार्मिक केन्द्रों का सुनियोजित विनाष जारी है। तिब्बती पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों का विनाष चिंताजनक है। चीन सरकार तिब्बती क्षेत्र से भारत विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा दे रही है। भारत सरकार को चाहिये कि वह भारतीय राष्ट्रीय हित में अपनी राष्ट्रीय शक्ति में निरंतर वृद्धि जारी रखे। वह सीमा पर ढाँचागत बुनियादी सुविधाओं का विकास और तीव्र गति से करे। चीन ने अप्रैल, 2020 में वास्तविक नियन्त्रण रेखा का उल्लंघन कर दिया था, जिसके बाद भारत ने अपनी सैन्य शक्ति वहाँ बढ़ा दी। तभी जून 2020 में गलवान घाटी की घटना घटी जिसमें चीनी सेना को भारतीय सेना के हाथों काफी नुकसान उठाना पड़ा। उसमें 20 भारतीय सैनिक भी वीरगति को प्राप्त हुए। उसके बाद दोनों देषों की सेनायें आमने-सामने खड़ी रहीं। भारत की बढ़ती सैन्य क्षमता और सामरिक तैयारी को देखकर अब 22 अक्टूबर, 2024 को देपसांग और डेमचोक से चीनी सेना पीछे हटने को तैयार हो गई। चीन सरकार भारत के साथ मिलकर काम करने को तैयार हो गई है। भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को दीपावली की मिठाई खिलाई। चैदह वर्षीय वनवास के बाद रामजी की अयोध्या वापसी की याद में दीपावली मनाई जाती है। ऐसे पवित्र उत्सव की मिठाई की मिठास क्या चीन सरकार याद रखेगी?

ठीक दीपावली के समय ही चीन सरकार ने सन् 1962 में भारत पर आक्रमण किया था। तब बड़े भारतीय भूभाग पर चीन ने कब्जा कर लिया था जिसे पूर्णतः मुक्त कराने का सर्वसम्मत संकल्प हमारी संसद ने 14 नवंबर, 1962 को ले रखा है। चीन सरकार ने भारत पर आक्रमण से पहले 29 अप्रैल, 1954 को भारत के साथ पंचषील समझौता किया था। तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू तब शांति के प्रतीक सफेद कबूतर उड़ाने और हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे लगाने में लगे थे। इसके विपरीत चीन की भारतविरोधी तैयारी चलती रही। जो चीन पंचषील समझौते को भूला बैठा वही चीन वास्तविक नियन्त्रण रेखा पर चार साल बाद फिर से गष्त प्रारम्भ करने संबंधी शर्तों को भी क्या अस्वीकार नहीं कर सकता है? अभी चीन समर्थक एक लॉबी भारत में है जो चीनी हित के अनुकूल भारत को अपमानित तथा शक्तिहीन करने में लगी रहती है। इस लॉबी से भी हमें योजनाबद्ध तरीके से निपटना होगा तभी भारत में देष विरोधी चीन समर्थक गतिविधियों पर रोक लगेगी।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ ०१. ताइवान के भक्तों ने परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना की

०१ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। आज ०१ अक्तूबर सुबह जब परम पावन दलाई लामा मुख्य तिब्बती मंदिर, सुगलागखांग जाने के लिए तैयार होकर अपने आवास के द्वार पर पहुंचे, तो ताइवान के अनुयायियों के प्रतिनिधिमंडल ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। जब प्रतिनिधिमंडल ने सोंगखापा की स्तुति में 'मिग-से-मा' प्रार्थना का जाप किया और भिक्षुओं ने आगे बढ़कर हार्न बजाया, तब परम पावन मंदिर की ओर चल पड़े। इस दौरान ताइवान के भिक्षु गलियारे के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े रहे।

लिफ्ट से मंदिर की पहली मंजिल पर पहुंचकर परम पावन ने प्रांगण में खड़ी भीड़ पर दृष्टिपात किया और मुस्कुराते हुए हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया। इसके बाद कालचक्र मंदिर की परिक्रमा करते हुए उन्होंने मंदिर के अंदर बैठी भिक्षुणियों का हाथ हिलाकर अभिवादन किया और खिड़कियों से मालाओं को उनके सामने फेंककर आशीर्वाद दिया।

मंदिर में परम पावन ने गंडेन त्रि रिनपोछे और जंगसे चोजे रिनपोछे का अभिवादन स्वीकार किया। परम पावन जब अपने आसन पर विराजमान हो गए तब पीठासीन लामा चांगक्या रिनपोछे ने उन्हें रेशमी दुपट्टा भेंट किया। सभा में चाय और खीर के प्रसाद परोसे गए। चांगक्या रिनपोछे के दाईं ओर ताइवान के मठाधीश तेनज़िन खेसुन और उनके बाईं ओर नामग्याल मठ के लोबपोन लोबसंग धारग्ये बैठे।

०१ अक्तूबर का यह समारोह 'आध्यात्मिक गुरु को अर्पण- लामा-चोपा' के नाम रहा। एक निश्चित समय पर वज्र गुरु को सोग-अर्पण प्रस्तुत किया गया। मूर्तियों आदि लेकर लोगों का एक जुलूस प्रांगण से मंदिर से होकर गुजरा। चांगक्या रिनपोछे ने परम पावन को ज्ञान शरीर, वाणी और मन के प्रतीक रूप एक मंडल अर्पित किया। इसके बाद गंडेन त्रि रिनपोछे ने भी इसी प्रकार की भेंट चढ़ाई।

परम पावन की दीर्घायु के लिए लिंग रिनपोछे और त्रिजांग रिनपोछे नामक उनके दो शिक्षकों द्वारा रचित प्रार्थना का पाठ किया गया। इसके बाद अनुयायियों के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य परम पावन के पास उनकी पूजा करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए पहुंचे। इस पंक्ति के अंत में चीनी नैन-नक्श के एक बुजुर्ग सज्जन ने परम पावन को अपना सम्मान पेश किया। सफेद बालों और सफेद दाढ़ी वाले ये सज्जन दीर्घायु के प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने एक हाथ में आड़ू और दूसरे हाथ में नक्काशीदार घोड़े के सिर वाली एक छड़ी ले रखी थी।

ताइवान में तिब्बती बौद्ध धर्म के अंतरराष्ट्रीय संघ (आईएटीबीटी) के सदस्यों और इस प्रवचन-सत्र में भाग लेने वाले १२२० से अधिक लोगों के साथ ही परम पावन दलाई लामा के प्रति अटूट भक्ति बनाए रखने

वाले शिष्यों की ओर से आईएटीबीटी के अध्यक्ष हू माओ हुआ मिंग ने भावुक अनुरोध किया। उन्होंने 'बोधिसत्वों के सैंतीस साधनाओं' से श्रद्धांजलि का एक श्लोक पढ़ने के साथ शुरुआत की।

मैं अपने तीन द्वारों से निरंतर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं,
मेरे सर्वोच्च शिक्षक और रक्षक चेनरेज़िग को,
जो सभी घटनाओं को आते-जाते हुए देखते हुए,
जीवों की भलाई के लिए एकनिष्ठ प्रयास करते हैं।

परम पावन दलाई लामा 'देवताओं और मनुष्यों के मार्गदर्शक, सर्वज्ञ और महान द्रष्टा, सौ युगों तक दृढ़ रहने वाले बुद्ध के सिद्धांतों के मानस्तंभ हैं। हम उनके दीर्घ जीवन के लिए आदरपूर्वक यह शुभ प्रार्थना करते हैं कि वे युगों-युगों तक अचल-अमर रहें और उनके प्रेम और करुणा के प्रकाश से सभी जीवों को हमेशा के लिए खुशी मिले और कल्याण होता रहे।

'छह सौ साल से भी अधिक समय पहले जब आदरणीय गुरु जे त्सोंगखापा दुनिया में आए तो उन्होंने मौलिक अनुशासन की शिक्षाओं के अलावा सम्यक मार्ग के तीन चरणों की साधना को स्पष्ट किया। इसी तरह, दलाई लामा के विभिन्न अवतारों की करुणा के कारण न केवल तिब्बती लोगों को लाभ हुआ है बल्कि बुद्ध की शिक्षाओं को संरक्षित करने, बनाए रखने और फैलाने के लिए अतुलनीय क्रियाकलाप हुए हैं।'

'इस समय, जब मानव मन शांत नहीं है और राष्ट्रों के बीच संघर्ष चल रहे हैं, परम पावन दलाई लामा ने 'प्रेम और करुणा' और 'परस्पर निर्भरता और अहिंसक आचरण के दृष्टिकोण' पर विशिष्ट शिक्षाएँ दी हैं। इससे न केवल उनके अनुयायियों की समझ बढ़ी है बल्कि उन लोगों में भी खुशी और प्रशंसा पैदा हुई है, जो आस्था नहीं रखते।'

'परम पावन ने साठ से अधिक वर्षों तक अथक रूप से जो शिक्षाएं दी हैं, उनके कारण हम समर्पित चीनी शिष्यों ने तिब्बती बौद्ध धर्म के साथ एक विशेष संबंध विकसित किया है। इससे धर्म और आंतरिक शांति के बारे

में हमारी समझ बढ़ी है और हमने जीवन के मूल्य को पहचाना है।

उन्होंने आगे कहा, 'परम पावन ने तीन बार ताइवान का दौरा किया है। सबसे पहले १९९७ में वे ताइवान गए और अपने शिष्यों को उपदेश दिए और उनका सशक्तीकरण किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न संवादों में भाग लिया और प्रवचन दिए। बाद में उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों को सांत्वना दी, उन्हें उपदेश सुनाए और उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की। उनकी करुणा अतुलनीय है।

उन्होंने कहा, 'दलाई लामा' की उपाधि केवल एक पदवी भर नहीं है, बल्कि प्रेम और शांति का प्रतीक है। परम पावन, आप न केवल तिब्बती लोगों के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, बल्कि बुद्ध की शिक्षाओं को बनाए रखने वालों के सिरमौर भी हैं। पूरी दुनिया के लिए आप करुणा और ज्ञान की प्रतिमूर्ति हैं। आपकी गतिविधियां न केवल तिब्बती लोगों के लिए बल्कि बौद्ध धर्म और पूरी मानवता के लिए अपरिहार्य हैं।

'परम पावन ने ०२ जनवरी २०१६ को दक्षिण भारत में ताशी ल्हुंपो मठ में दिए अपने प्रवचन में कहा, 'जब हम पहली बार भारत में शरणार्थी के रूप में आए तो हम नीचे धरती और ऊपर आसमान के अलावा किसी को नहीं जानते थे। लेकिन, क्योंकि हम एक साथ काम करने में सक्षम थे, इसलिए हमने अच्छे परिणाम प्राप्त किए हैं।' इन शब्दों ने हमें गहराई से छुआ।

सभी प्राणियों के कल्याण की कामना करने वाले दूरदर्शी द्रष्टा महान बोधिसत्व परम पावन के नेतृत्व के बिना बुद्ध की अनमोल शिक्षाओं का दुनिया भर में इतने व्यापक रूप से फैलना बिल्कुल असंभव होता। जितना अधिक हम इस पर चिंतन करते हैं उतना ही अधिक हम महसूस करते हैं कि परम पावन की दयालुता विचार और शब्द से परे है। यहां, सभी चीनी शिष्यों की ओर से मैं ईमानदारी से प्रार्थना करता हूं कि परम पावन का जीवन युगों-युगों तक दृढ़ रहे और धर्म का चक्र हमेशा घूमता रहे। मैं यह भी ईमानदारी से अनुरोध करता हूं कि भगवान बुद्ध की शिक्षाओं और सभी प्राणियों के कल्याण के लिए दलाई लामाओं की पुनर्जन्म की परंपरा निर्बाध रूप से जारी रहे, जैसा कि अतीत से लेकर वर्तमान तक चली आ रही है। यह जरूरी है कि भविष्य के संवेदनशील प्राणी सीधे गुरु अवलोकितेश्वर से मिल सकें, उनकी शिक्षाएं और आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। कृपया, कृपया, कृपया हमारी इस विनती को स्वीकार करें।'

परम पावन ने इसके बाद सभा को संक्षिप्त रूप से संबोधित किया।

'आज आप ताइवान के लोगों ने मेरे दीर्घायु होने के लिए यह अनुष्ठान किया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि जहां बौद्ध धर्म का ह्रास हुआ है, वहां यह फिर से फले-फूले और जहां यह अभी तक नहीं फैला है, वहां इसका प्रचार-प्रसार हो। चीन और अन्य जगहों पर बौद्ध धर्म के बारे में लोगों की रुचि बढ़ रही है। मैंने तिब्बत, चीन और मंगोलिया में बौद्ध धर्म को फलते-फूलते देखने के लिए कड़ी मेहनत की है।'

'हम तिब्बतियों ने बुद्ध की संपूर्ण शिक्षा को संरक्षित किया है, लेकिन हम अभी भी अनुष्ठान करने में बहुत अधिक प्रयास करते हैं। जो लोग अभ्यास और ध्यान करते हैं, वे अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं। एक बच्चे के रूप में, मुझे भी अध्ययन या अभ्यास में बहुत रुचि नहीं थी, लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे तीन प्रशिक्षणों को बनाए रखने के व्यावहारिक लाभों की सराहना करने लगा। और इसी कारण से, मैंने अभ्यास किया है और उन मित्रों के साथ शिक्षा को साझा किया है जो इसमें रुचि रखते थे।

"मैंने अपने सपनों में देखा है कि मैं एक सौ दस साल से अधिक जीवित रह सकता हूं।'

'हम तिब्बत, चीन और मंगोलिया के लोग जहां भी हों, सभी इंसान होने के नाते एक जैसे हैं। जैसा कि मैंने कहा, बौद्ध धर्म अब दुनिया के अन्य भागों में फैल गया है। जब मैं वैज्ञानिकों से मिलता हूं तो मैं एक वैज्ञानिक होता हूँ। जब मैं धार्मिक लोगों से मिलता हूँ, तो मैं भी धार्मिक होता हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि बौद्ध धर्म न केवल जीवित रहे, बल्कि फले-फूले। बस इतना ही। ताशी देलेक।'

चांगक्या रिनपोछे ने परम पावन को दीर्घायु होने के अनुरोध को स्वीकार करने के एवज में धन्यवाद देने के लिए एक मंडल और सम्यक ज्ञान, शरीर, वाणी और मन के प्रतिरूप चित्र भेंट किए।

जैसे ही ताइवान के शिष्य सिंहासन के पास पहुंचे, 'आध्यात्मिक गुरु को लामा-चोपा अर्पण' से एक प्रमुख श्लोक का पाठ किया गया।

आप गुरु हैं; आप देवता हैं; आप आकाश गामी और धर्म के रक्षक हैं।
अब से लेकर आत्मज्ञान तक, मैं आपके अलावा किसी और की शरण नहीं लूंगा।
इस जीवन में, मध्यवर्ती अवस्था में और सभी भावी जीवनों में, मुझे अपनी करुणा की डोरी से थामे रहो।
मुझे चक्रीय अस्तित्व और शांति के भय से मुक्त करो, सभी सिद्धियां प्रदान करो,
मेरे निरंतर मित्र बनो और किसी तरह के हस्तक्षेप से मेरी रक्षा करो।

इसके बाद 'आध्यात्मिक गुरु को अर्पण' में बताए गए आत्मज्ञान के मार्ग के पाठ की समीक्षा की गई। परंपरा के अनुसार, समारोह का समापन 'प्रेयर ऑफ द वर्ड्स ऑफ ट्रूथ (सत्य के शब्दों की प्रार्थना)' के पाठ के साथ हुआ, जो इस प्रकार है:

इस तरह, रक्षक चेनरेज़िग ने बुद्धों और बोधिसत्वों के समक्ष
बर्फ की भूमि को पूरी तरह से अपनाने के लिए विशाल प्रार्थनाएं कीं;
इन प्रार्थनाओं के अच्छे परिणाम अब शीघ्र ही प्रकट हों।
शून्यता और सापेक्ष रूपों की गहन अन्योन्याश्रयता से,
और तीन रत्नों और उनके सत्य वचनों में महान करुणा की शक्ति से,
और कर्मों और उनके फलों के अचूक नियम की शक्ति से,
यह सत्यपूर्ण प्रार्थना निर्बाध और शीघ्र पूरी हो।

◆ ०२. परम पावन दलाई लामा ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में गठबंधन की सफलता पर उमर अब्दुल्ला को बधाई दी

१७ अक्टूबर, २०२४

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा ने उमर अब्दुल्ला को हाल ही में हुए केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में उनके गठबंधन की सफलता और मुख्यमंत्री के रूप में उनकी नियुक्ति पर बधाई देने के लिए पत्र लिखा है।

उन्होंने लिखा, 'जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, शेख अब्दुल्ला के दिनों से लेकर आपके परिवार की तीन पीढ़ियों को जानने का मुझे सौभाग्य मिला है। मैं अपनी दोस्ती को संजो कर रखता हूं।'

'मैं आपके सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने और जम्मू-कश्मीर के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के अवसरों में आपकी सफलता की कामना करता हूं।'

◆ ०३. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने जापान के नए प्रधानमंत्री माननीय शिगेरू इशिबा को बधाई दी

०३ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। जापान में हाल में संपन्न चुनाव में लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ जापान की जीत पर पार्टी और इसके नेता माननीय शिगेरू इशिबा को बधाई देने के लिए ०३ अक्तूबर २०२४ को निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों की ओर से माननीय शिगेरू और उनकी पार्टी को एक बधाई पत्र लिखा।

सिक्योंग ने लिखा, 'जापान ने परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों को शानदार आतिथ्य लगातार प्रदान किया है। परम पावन के निर्वासन में भारत आने के कुछ सालों बाद १९६७ में ही जापान द्वारा परम पावन का स्वागत किया गया था। इसके बाद से पिछले कई वर्षों में जापान एक ऐसा देश रहा है जहाँ अधिकांश लोग परम पावन के प्रति गहरी प्रशंसा और सम्मान रखते हैं और जिसने कई अवसरों पर परम पावन की मेजबानी की है'। सिक्योंग ने इसी तरह तिब्बती लोगों की जापान की स्वतंत्रता, लोकतंत्र और कानून के शासन के प्रति अडिग प्रतिबद्धता के साथ-साथ मानवाधिकारों की वकालत को लेकर प्रशंसा की। उसकी यह प्रतिबद्धता खासकर तिब्बत, पूर्वी तुर्किस्तान, दक्षिणी मंगोलिया और उसके बाहर भी चीन द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन और दमन के खिलाफ रही है। सिक्योंग ने कहा, 'अधिनायकवाद और स्वतंत्रता के उल्लंघन के खिलाफ जापान का साहसिक रुख अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा में वैश्विक नेतृत्व का एक सच्चा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

यह तिब्बत के अंदर और निर्वासन में रह रहे तिब्बती लोगों के लिए आशा की एक चमकदार किरण भी है कि जापान में तिब्बत के लिए दुनिया के सबसे बड़े संसदीय समर्थन समूहों में से एक है, जिसमें पार्टी लाइनों से परे जाकर १०० से अधिक सांसद शामिल हैं।'

◆ ०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने लक्जमबर्ग का दौरा कर तिब्बत समर्थकों के साथ संबंधों को मजबूत किया

११ अक्तूबर, २०२४

लक्जमबर्ग। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग १० अक्तूबर की सुबह लक्जमबर्ग हवाई अड्डा पर उतरे, जहां लक्जमबर्ग के तिब्बती समुदाय ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

सिक्योंग के साथ प्रतिनिधि रिग्जिन चोएडन जेनखांग भी थे। इन दोनों के सम्मान में यूरोपीय संसद की पूर्व सदस्य और यूरोपीय लेखा परीक्षक न्यायालय की वर्तमान सदस्य महामहिम लाइमा एंड्रीकिएन ने प्रतिष्ठित सर्कल मुंस्टर ए.एस.बी.एल. में दोपहर के भोजन का आयोजन किया।

तिब्बत की लंबे समय से मित्र और समर्थक महामहिम लाइमा ने तिब्बत और तिब्बती लोगों के सामने उपस्थित मौजूदा स्थिति की गहरी समझ हासिल करने की इच्छा व्यक्त की। लिथुआनियाई मूल की महामहिम लाइमा ने अपने बचपन की यादें साझा कीं। उन्होंने याद करते हुए कहा कि कैसे उनके माता-पिता उन्हें उनकी दादा-दादी की कहानियां सुनाते थे, जो उनके माता-पिता को आश्वस्त करते थे कि एक दिन वे एक स्वतंत्र लिथुआनिया देखेंगे और वहां रहेंगे। हालांकि उस समय ऐसा विचार अविश्वसनीय लग सकता था, लेकिन यह अब एक वास्तविकता बन गया है। अपने व्यक्तिगत अनुभव के अनुरूप ही उन्होंने तिब्बत के लोगों के साथ एक गहरा संबंध व्यक्त किया और तिब्बती मुद्दे के लिए अपनी गहरी सहानुभूति व्यक्त की।

उन्होंने तिब्बत के मुद्दे को आगे बढ़ाने में समर्पित प्रयासों के लिए सिक्योंग की सराहना की और तिब्बती समुदाय के लिए और अधिक योगदान देने की इच्छा व्यक्त की। सिक्योंग और प्रतिनिधि रिग्जिन चोएडेन ने भी लाइमा को परम पावन दलाई लामा के अगले साल जुलाई में होनेवाले ९०वें जन्मदिन समारोह में शामिल होने के लिए अनौपचारिक निमंत्रण दिया।

गर्मजोशी के माहौल में हुए दोपहर के भोजन के बाद सिक्योंग को तिब्बत के लंबे समय से समर्थक रहे एक अन्य समूह- लेस एमिस डु तिब्बत- से मिलवाया गया। यह एक ऐसा संगठन है जो तिब्बतियों का समर्थन करने के लिए खासकर, तिब्बती चिल्ड्रन विलेज स्कूलों में बच्चों को मदद करने के माध्यम से सक्रिय रूप से काम कर रहा है। 'लेस एमिस डु तिब्बत' के अध्यक्ष पियरे बाउमन ने सिक्योंग को एसोसिएशन के सदस्यों से मिलवाया, जिन्होंने फिर से तिब्बत पर एक अनौपचारिक चर्चा की। इसके बाद एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सम्मेलन हुआ।

तिब्बत की स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 'लेस एमिस डु तिब्बत' की प्रतिबद्धता उनके द्वारा दोभाषिया को नियुक्त करने के उनके विचारशील निर्णय से स्पष्ट थी। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि श्रोताओं को सिक्योंग की बात की स्पष्ट और अधिक व्यापक समझ की जरूरत थी। अपने संबोधन के दौरान सिक्योंग ने तिब्बत के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से एशिया के 'वॉटर टॉवर' के रूप में तिब्बत की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने दर्शकों से 'ड्रैगन को न खिलाने' का भी आग्रह किया, जो एक प्रतीकात्मक कार्रवाई का आह्वान था। इसमें चीन को उस बिंदु तक सशक्त बनाने के खिलाफ चेतावनी दी गई थी जहां यह खतरनाक रूप से हावी हो जाए।

दर्शकों ने तिब्बत से जुड़े मुद्दों में गहरी दिलचस्पी दिखाई और सिक्योंग से व्यावहारिक सवाल पूछे। सिक्योंग की लक्ज़मबर्ग यात्रा का पहला दिन 'लेस एमिस डू तिब्बत' की टीम के साथ एक अनौपचारिक रात्रिभोज के साथ संपन्न हुआ, जहाँ तिब्बत को लेकर गर्मजोशी भरे अनौपचारिक माहौल में बातचीत जारी रही।

◆ ०५. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ताइवान की पूर्व राष्ट्रपति साई इंग-वेन के साथ २८वें फोरम २००० में भाग लिया

१४ अक्तूबर, २०२४

प्राग (चेक गणराज्य)। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग १३ अक्तूबर की सुबह-सुबह प्राग पहुंचे, जो उनके यूरोपीय दौरे का अंतिम पड़ाव था। यहाँ वे १३ से १५ अक्तूबर तक होने वाले २८वें फोरम २००० में भाग लेंगे। सिक्योंग की यात्रा का पहला दिन तिब्बत समर्थक समूहों- पोटाला हिमालयन सेंटर की प्रतिनिधि जुज़ाना और लुंगटा की प्रतिनिधि एडिटा क्लेकरोवा के साथ बैठक के साथ शुरू हुआ। उनकी चर्चा परम पावन दलाई लामा के आगामी ९०वें जन्मदिन समारोह की योजनाओं पर केंद्रित थी, जिसमें परियोजना कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दिया गया।

बातचीत के दौरान प्रतिनिधियों ने परम पावन की वर्तमान सेहत के बारे में चेक मीडिया में अपर्याप्त जागरुकता के बारे में चिंता व्यक्त की। इस कारण वहां पर परम पावन के स्वास्थ्य और तिब्बतियों, विशेष रूप से तिब्बत में रहने वालों की स्थिति के बारे में पूछताछ हुई। इस बैठक के बाद सिक्योंग ने 'वॉयस ऑफ अमेरिका' के लियाम स्कॉट और जेसिका जेरेट को साक्षात्कार दिया। इसमें उन्होंने चीन द्वारा राष्ट्रों की सीमाओं के परे जाकर दमनात्मक कार्रवाई किए जाने के मुद्दे को उठाया और तिब्बत-चेक गणराज्य संबंधों के महत्व को रेखांकित किया।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने शाम को २८वें फोरम २००० में अर्जेंटीना के चैंबर ऑफ डेप्युटीज के विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष माननीय फर्नांडो इग्लेसियस और चेक गणराज्य में अर्जेंटीना के राजदूत माननीय क्लाउडियो जे. रोज़ेंक्वेग के साथ बैठक की। माननीय फर्नांडो इग्लेसियस ने एक पत्रकार के रूप में अपने व्यापक अनुभव और ज्ञान का उपयोग करते हुए चीनी इतिहास की गहन समझ दिखाई और मानवाधिकारों के प्रति अपना दृढ़ समर्थन व्यक्त किया और उत्पीड़न से पीड़ित लोगों के लिए चिंता व्यक्त की। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दोनों गणमान्य व्यक्तियों को 'तिब्बत ब्रीफ २०२०' और तिब्बत पर प्रोफेसर लाउ की पुस्तक के बारे में व्यापक समीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित किया उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे चीनी सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समक्ष प्रचारित कथानक को स्वीकार करने के बजाय इन सामग्रियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

दिन भर के कार्यक्रमों का समापन प्रतिष्ठित प्राग कांग्रेस सेंटर में आयोजित २८वें फोरम २००० के उद्घाटन और पुरस्कार समारोह के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में दुनिया भर से गणमान्य लोग एकत्रित हुए। सम्मेलन का विषय लोकतंत्र था। ताइवान की पूर्व राष्ट्रपति

महामहिम साई इंग-वेन और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग प्रमुखता से अग्रिम पंक्ति में बैठे थे। उद्घाटन समारोह में मुख्य वक्ताओं में चेक गणराज्य के सीनेट के अध्यक्ष माननीय मिलोस विस्ट्रिल और वाल्टर रसेल मीड शामिल थे। मीड ने वर्तमान वैश्विक स्थिति की गंभीरता पर जोर देते हुए कहा, '१९४० के दशक के बाद से लोकतंत्र इस तरह के खतरे में नहीं रहा है जितना अभी है और १९३० के दशक के बाद से दुनिया किसी प्रमुख शक्ति संघर्ष के इतने करीब नहीं रही है।' उन्होंने स्वतंत्र देशों में व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित जिम्मेदारी और साहस की कमी पर प्रकाश डाला, जिसने चीन और अन्य जैसे देशों की भूराजनीतिक विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं को बल मिला है। वक्ताओं ने बढ़ती वैश्विक चुनौतियों के बीच सामूहिक रूप से लोकतंत्र की रक्षा करने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। इस तरह इस कार्यक्रम ने गणमान्य व्यक्तियों को सार्थक संवाद में शामिल होने और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने पर विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए विशिष्ट मंच प्रदान किया।

◆ ०६. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दिल्ली में 'तिब्बत के भविष्य की रूपरेखा' विषयक सेमिनार को संबोधित किया

२२ अक्तूबर, २०२४

नई दिल्ली। २१ अक्तूबर २०२४ की शाम को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने 'तिब्बत के भविष्य की रूपरेखा: तिब्बत समाधान अधिनियम, निर्वासन में रणनीतियां, परम पावन दलाई लामा की विरासत और भारत की भूमिका' विषयक एक वार्ता सत्र के दौरान मुख्य भाषण दिया।

इस कार्यक्रम का आयोजन इंडिया इंटरनेशनल सेंटर एनेक्सी के लेक्चर रूम १ में फाउंडेशन फॉर नॉन-वायलेंट अल्टरनेटिव्स (एफएनवीए) द्वारा किया गया था। प्रतिष्ठित वक्ताओं में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग और एफएनवीए के संस्थापक ट्रस्टी ओम प्रकाश टंडन शामिल थे। सिक्योंग ने यहां तिब्बती मामलों की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी। मेजर जनरल अशोक कुमार मेहता ने विचारों के रचनात्मक आदान-प्रदान को सुनिश्चित करते हुए सत्र का संचालन किय। लोकसभा के पूर्व सदस्य और ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम फॉर तिब्बत (एपीआईपीएफटी) के पूर्व संयोजक श्री सुजीत कुमार ने भी चर्चा में भाग लिया। चर्चा में रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट के महत्व और तिब्बत और तिब्बती निर्वासित समुदाय के भविष्य पर इसके संभावित प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया। सिक्योंग ने निर्वासन में तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को बनाए रखने और मजबूत करने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) द्वारा विकसित की जा रही रणनीतियों पर विस्तार से बताया।

सिक्योंग ने 'तिब्बत पॉलिसी एंड सपोर्ट ऐक्ट (तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम)' के महत्व को उजागर किया तथा तिब्बती लोगों के अधिकारों और स्वायत्तता की वकालत करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे यह अधिनियम तिब्बत के प्रति अमेरिकी नीति के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है, तिब्बती मुद्दे के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन को मजबूत करता है और तिब्बत में मानवाधिकारों के हनन के लिए चीनी सरकार को जवाबदेह ठहराता है। उन्होंने कहा, 'यह अधिनियम केंद्रीय तिब्बती नेतृत्व का समर्थन करता है, तिब्बती मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए वैश्विक भागीदारों के साथ संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करता है।' उन्होंने आगे अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा, 'हम एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक तिब्बत की आकांक्षा रखते हैं, और हम शांतिपूर्ण प्रतिरोध और न्याय की खोज के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

इसके अलावा, सिक्योंग ने तिब्बत के नेतृत्व के इतिहास का संक्षिप्त विवरण दिया, जिसमें १५वीं शताब्दी से लगातार दलाई लामाओं का नेतृत्व स्थापित रहा है। उन्होंने १९१३ के बाद तिब्बत की संप्रभुता के बारे में गलत धारणाओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि १९१२ में किंग राजवंश के पतन के बाद चीनी सेनाओं को खदेड़ने के बाद तिब्बत ने स्वशासन बनाए रखा। उन्होंने जोर देकर कहा, 'किसी भी विदेशी देश ने कभी भी तिब्बत पर सीधे शासन नहीं किया है। हालांकि बाहरी प्रभाव के उदाहरण रहे हैं, लेकिन तिब्बत कभी भी सीधे विदेशी नियंत्रण में नहीं रहा है।'

सिक्योंग ने भारत और तिब्बत के बीच गहरे ऐतिहासिक संबंधों का वर्णन किया और तिब्बती लिपियों और धर्म पर भारत के प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कुछ ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, तिब्बत के पहले राजा भारतीय वंश के थे। इसके अलावा, उन्होंने परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में निर्वासन में जाने के बाद तिब्बती शरणार्थियों को उनके समर्थन के लिए भारत सरकार और लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। सिक्योंग ने तिब्बती पठार के भू-राजनीतिक और सामरिक महत्व पर भी प्रकाश डाला। इस दौरान उन्होंने ब्रह्मपुत्र या यारलुंग त्सांगपो और मेकांग सहित प्रमुख नदियों के स्रोत के रूप में तिब्बत की भूमिका पर प्रकाश डाला और तिब्बत की जलधाराओं को चीन द्वारा मोड़ने पर चिंता व्यक्त की। चीन का यह कृत्य भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे निचले देशों को प्रभावित करता है।

वार्ता का मुख्य आकर्षण तिब्बती स्वतंत्रता और तिब्बती संस्कृति और पहचान के संरक्षण के लिए वैश्विक आंदोलन को आकार देने में परम पावन १४वें दलाई लामा की स्थायी विरासत को लेकर चर्चा रहा। १९५९ में अपने निर्वासन के बाद से परम पावन तिब्बती लोगों के अधिकारों की वकालत करने वाले और करुणा और अहिंसा के संदेश को बढ़ावा देने वाले महत्वपूर्ण शख्सियत रहे हैं। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने कहा, 'परम पावन की शिक्षाओं ने न केवल तिब्बत के भीतर समर्थन को बढ़ावा दिया है, बल्कि दुनिया भर के व्यक्तियों और आंदोलनों को न्याय और मानवाधिकारों के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित किया है।' उन्होंने कहा,

'बातचीत और चीजों को समझने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तिब्बती मुद्दे के साथ प्रतिध्वनित होती रहती है।'

सिक्योंग ने तिब्बती पठार के महत्व को रेखांकित किया, जिसे अक्सर 'दुनिया की छत', 'तीसरा ध्रुव' या 'एशिया का जल मीनार' कहा जाता है। उन्होंने कहा, 'तिब्बत से निकलने वाली नदियाँ, जैसे यारलुंग त्सांगपो, माचू और द्ज़ाचू, एशिया के करोड़ों लोगों की जीवन रेखा बन गई हैं।' उन्होंने बताया कि 'दुनिया की दो सबसे पुरानी सभ्यताएं- सिंधु घाटी सभ्यता और चीनी सभ्यता- भी तिब्बत की नदियों पर निर्भर हैं।'

हालांकि, सिक्योंग ने चीनी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा तिब्बती नदियों के चल रहे कुप्रबंधन पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा, 'यह स्थिति पर्यावरण और निचले इलाके के देशों में लाखों लोगों की आजीविका के लिए गंभीर खतरा है।' उन्होंने भविष्य के लिए गंभीर नतीजों की चेतावनी दी और इन महत्वपूर्ण जल संसाधनों की रक्षा के लिए स्थायी प्रथाओं की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया।

सत्र का समापन प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों को सीधे जुड़ने और सवाल पूछने का मौका मिला। इस कार्यक्रम ने वर्तमान राजनीतिक स्थिति, तिब्बती समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों और तिब्बत के भविष्य की सुरक्षा के लिए सीटीए की योजनाओं के बारे में प्रश्नों के उत्तर देने के माध्यम से जानकारी दी गई।

◆ ०७. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दो दिवसीय 'हिम फिल्म महोत्सव २०२४' के समापन सत्र में भाग लिया

२५ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २४ अक्तूबर २०२४ की शाम को १४वीं हिमाचल प्रदेश विधानसभा के सदस्य श्री सुधीर शर्मा और प्रसिद्ध भारतीय फिल्म अभिनेता श्री मनोज एन. जोशी के साथ धर्मशाला में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में दो दिवसीय 'हिम फिल्म महोत्सव २०२४' के समापन-सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया।

कांगड़ा के महत्वाकांक्षी फिल्म निर्माताओं के कार्यों का जश्न मनाने वाले महोत्सव के समापन समारोह में अपने मुख्य भाषण में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ज्यूरिख फिल्म महोत्सव के दौरान 'विजडम ऑफ हैप्पीनेस' के प्रीमियर में अपने हाल के अनुभव पर विचार किया। फिल्मों का समुदाय पर किस तरह जबरदस्त प्रभाव पड़ता है, इस पर अपने विचार साझा करते हुए सिक्योंग ने 'विजडम ऑफ कम्पैशन' का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह परम पावन दलाई लामा के एक साक्षात्कार पर आधारित है। उन्होंने कहा कि प्रसिद्ध अमेरिकी अभिनेता और कट्टर तिब्बत समर्थक रिचर्ड गेरे द्वारा सह-निर्मित इस वृत्तचित्र का जल्द ही भारत में अपर तिब्बती चिल्ड्रन विलेज में पहला प्रदर्शन होगा। सिक्योंग ने सभा में मौजूद सभी लोगों को फिल्म देखने के लिए प्रोत्साहित किया और अपने समुदायों के भीतर करुणा को बढ़ावा देने के लिए परम पावन द्वारा दिए गए संदेशों को फैलाने के महत्व पर जोर दिया।

समारोह में उपस्थित अन्य अतिथियों ने भी पुरस्कार वितरण से पहले कार्यक्रम को संबोधित किया और युवा फिल्म निर्माताओं को जानकारी देते हुए फिल्म निर्माण पर अपने विचार साझा किए।

◆ ०८. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने महात्मा गांधी की १५५वीं जयंती मनाई

०२ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। आज ०२ अक्तूबर की सुबह केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृवर्ग और वरिष्ठ कर्मचारियों ने १५५वीं गांधी जयंती पर गंगचेन क्याशोंग में बैठक आयोजित कर अहिंसा के प्रतीक महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के कार्यवाहक सिक्योंग कालोन थरलम डोल्मा चांगरा, सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के कालोन नोरज़िन डोल्मा, महालेखा परीक्षक लखपा ग्यालत्सेन और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के विभिन्न विभागों के सचिव और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

मीडिया को संबोधित करते हुए कार्यवाहक सिक्योंग थरलम डोल्मा चांगरा ने गांधी की शिक्षाओं और अहिंसा के सिद्धांत के सार्वभौमिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, 'हम तिब्बतियों के लिए ये सिद्धांत विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि परम पावन ने बार-बार महात्मा गांधी की अहिंसा के मार्ग पर चलने पर जोर दिया है।'

अहिंसा की वैश्विक प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए कलोन थरलम डोल्मा चांगरा ने कहा कि वर्तमान में बढ़ती वैश्विक उथल-पुथल के मद्देनजर अहिंसा का सिद्धांत वैश्विक शांति और सद्भाव लाने में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। शिक्षा कालोन ने औपचारिक रूप से समारोह की शुरुआत करने के लिए औपचारिक रूप से घी का दीपक जलाने से पहले इस दिन के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

इसके बाद, कालोन नोरज़िन डोल्मा और सचिवों ने महात्मा गांधी के चित्र पर श्रद्धांजलि अर्पित करके उनकी विरासत के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया।

◆ ०९. आईसीटी जर्मनी के एक प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

२५ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। आईसीटी जर्मनी के निदेशक मंडल के एक प्रतिनिधिमंडल ने २५ अक्तूबर २०२४ को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग से मुलाकात की।

डिप्टी स्पीकर द्वारा प्रतिनिधिमंडल का औपचारिक तिब्बती स्कार्फ ओढ़ाकर स्वागत किया गया और संसद भवन का दौरा कराया गया, जहां उन्हें निर्वासित तिब्बती संसद के विकास, संरचना और कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी गई। डिप्टी स्पीकर ने उनके प्रश्नों का स्पष्टीकरण भी दिया।

इसके बाद, स्थायी समिति के हॉल में आईसीटी जर्मनी के प्रतिनिधिमंडल के साथ स्पीकर और डिप्टी स्पीकर की बैठक आयोजित की गई। अतिथियों का स्वागत करते हुए स्पीकर ने अहिंसक दृष्टिकोण के माध्यम से चीन-तिब्बती संघर्ष को हल करने और तिब्बती निर्वासितों के कल्याण के केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के दृष्टिकोण को विस्तार से व्यक्त किया।

उन्होंने चीन-तिब्बत संघर्ष का समाधान होने तक तिब्बत के समर्थकों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने परम पावन दलाई लामा को उद्धृत करते हुए कहा कि 'तिब्बत का समर्थन करना सत्य का समर्थन करना है' और तिब्बत के न्यायपूर्ण मुद्दे के लिए उनके निरंतर समर्थन का आग्रह किया। तिब्बत पर पिछले और आगामी विश्व सांसदों के सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) के बारे में बोलते हुए स्पीकर ने निर्वासित तिब्बती संसद और तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी) के बीच निरंतर सहयोग की अपील की।

स्पीकर के संबोधन के बाद डिप्टी स्पीकर ने निर्वासित तिब्बती संसद में उनका स्वागत कर अपना सम्मान व्यक्त किया और तिब्बत समर्थकों के प्रति तिब्बत के मुद्दे में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया।

डिप्टी स्पीकर ने दुनिया के लिए तिब्बत के पठार और उसके नाजुक पर्यावरण और नदियों के महत्व को रेखांकित किया, जिन्हें चीनी सरकार द्वारा बेलगाम शोषण के माध्यम से नष्ट किया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यदि शीघ्रता से समाधान नहीं किया गया तो यह पर्यावरणीय विनाश अपूरणीय हो सकता है।
चर्चा में आए अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों में तिब्बत का ऐतिहासिक तथ्य शामिल था कि यह एक स्वतंत्र राष्ट्र है जो दो एशियाई दिग्गजों- भारत और चीन के बीच एक बफर के रूप में कार्य करता रहा है। चर्चा में मानवाधिकारों के उल्लंघन, राजनीतिक दमन, आर्थिक और सामाजिक हाशिए पर डालना, अवैध चीनी कब्जे का विरोध करने वाले तिब्बतियों द्वारा आत्मदाह और तिब्बत में तिब्बतियों की स्थिति को भी शामिल किया गया, जहां उनकी पहचान रणनीतिक रूप से अपनाई गई चीनी नीतियों के कारण खतरे में है।

प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे:-

सबीन बॉमर: आईसीटी-जर्मनी की अध्यक्ष, २००२ से संस्थापक सदस्य और लंबे समय से तिब्बत समर्थक। वह तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी) की अंतरराष्ट्रीय समन्वय परिषद में भी कार्य करती रही हैं और एक जर्मन बैंकिंग संघ की पत्रकार हैं।

डॉ. नामरी दग्याब: आईसीटी-जर्मनी की बोर्ड सदस्य।
प्रो. डॉ. जान एंडरसन: आईसीटी-जर्मनी की मानद बोर्ड सदस्य और संस्थापक सदस्य, आईसीटी यूरोप और स्वीडिश तिब्बत समिति से जुड़ी हुई हैं और परम पावन दलाई लामा की लंबे समय से मित्र हैं।
कैटरीना बर्सिकोवा: आईसीटी-जर्मनी की बोर्ड सदस्य, चेक सपोर्ट तिब्बत की अध्यक्ष और चेक विदेश मामलों की कर्मचारी।
डॉ. मार्टिन बर्सिक: आईसीटी-यूरोप, चेक सपोर्ट तिब्बत के बोर्ड सदस्य और चेक के पूर्व पर्यावरण मंत्री और उप प्रधानमंत्री।

क्रिस्टोफ श्रिट्जर: आईसीटी-जर्मनी के सदस्य और प्रो. डॉ. एंडरसन के पति।
नोएमी बर्सिकोवा: मार्टिन और कैटरिना बर्सिक की बेटी।
डॉ. टिल बॉमर: सबाइन बॉमर के बेटे।
काई मुलर: आईसीटी-जर्मनी के कार्यकारी निदेशक।

◆ १०. पेरिस में 'पार्लियामेंटरी यूरोप तिब्बत एडवोकेसी' जारी, प्रमुख नेताओं से मुलाकात

२५ अक्तूबर, २०२४, तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

धर्मशाला। २३ अक्तूबर २०२४ को निर्वासित तिब्बती सांसद के सदस्यों- गेशे न्गाबा गंगरी, शेरिंग यांगचेन, तेनज़िन जिग्दल और थुप्टेन ग्यात्सो के तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने मानवाधिकार मामलों के प्रभारी और पेरिस के उप महापौर जीन-ल्यूक रोमेरो मिशेल के अलावा पेरिस के पार्षद जेनेविएव गैरिगोस से मुलाकात की।

अपनी बैठक के दौरान उन्होंने तिब्बत की वर्तमान गंभीर स्थिति, पेरिस में तिब्बतियों की स्थिति और अन्य मुद्दों पर चर्चा की।

दोपहर में तिब्बती सांसदों ने फ्रांसीसी नेशनल असेंबली में सोशलिस्ट पार्टी की विदेश मामलों की समिति के सदस्यों- सांसद डायनेबा डियोप, सांसद पास्कल गोट, सांसद स्टीफन हैब्लोट और सांसद पियरे प्रीबेटिच के साथ सकारात्मक बैठक की।

बैठक के दौरान उन्होंने तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की और संसद के निचले सदन में तिब्बत समर्थक समूह की पुनः स्थापना के लिए दृढ़ता से आग्रह किया, जैसा कि पहले से मौजूद था। प्रतिनिधिमंडल में ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय से प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग और पेरिस स्थित ब्यूरो डू तिब्बत से समन्वयक थुप्टेन शेरिंग शामिल थे।

◆ ११. भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में डीआईआईआर तिब्बत जागरुकता वार्ता का आयोजन

०७ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) ने वाराणसी और गुजरात के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में दो सप्ताह की तिब्बत जागरुकता वार्ता शृंखला और तिब्बत संग्रहालय प्रदर्शनी का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस अभियान का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों को भारत के साथ तिब्बत के चिरस्थायी संबंधों और चीनी सरकार के दमनकारी शासन और नीतियों के तहत तिब्बत के अंदर की गंभीर वर्तमान स्थिति के बारे में जागरूक करना था। इस अभियान में १३ विश्वविद्यालयों में कुल १३४८ प्रतिभागियों से संपर्क और संवाद किया गया।

वार्ता के दौरान, तेनज़िन कुनखेन और रिनचेन जैसे वक्ताओं ने तिब्बत की वर्तमान मानवाधिकार चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने तिब्बत के वैश्विक महत्व पर जोर दिया और भारतीय छात्रों से अपने शैक्षणिक कार्यों में इन मुद्दों को शामिल करने का आग्रह किया। वक्ताओं ने उपस्थित लोगों को तिब्बत की स्थिति के बारे में जागरुकता बनाए रखने के लिए पत्रिकाओं में लेख लिखकर चल रही बातचीत को उजागर करने और इस क्षेत्र की चिंताओं पर विद्वतापूर्ण बहस चलाकर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

वाराणसी में तिब्बत जागरुकता वार्ता

तिब्बत वार्ता का पहला चरण २३ -२४ सितंबर को वाराणसी के तीन अहम संस्थानों में आयोजित किया गया। इनमें केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान में आयोजित वार्ता में २५० छात्रों और संकाय सदस्यों ने भाग लिया, जबकि मालवीय शिक्षा निकेतन इंटर कॉलेज के कार्यक्रम में १०० प्रतिभागियों ने भाग लिया। अभियान का तीसरा स्थल प्रतिष्ठित काशी हिंदू विश्वविद्यालय रहा जहां २० तिब्बती छात्रों के माध्यम से विविध दर्शक वर्ग तक इसका विस्तार हुआ।

गुजरात में तिब्बत जागरुकता वार्ता

गुजरात बीटीएस के राज्य अध्यक्ष श्री भावेश जोशी के नेतृत्व में भारत-तिब्बत संघ (बीटीएस) के जीवंत और स्नेही टीम ने गुजरात में भारत-तिब्बत संघ के सदस्यों ने न केवल वार्ता की व्यवस्था करने में सहायता की, बल्कि राज्य में परिवहन और आवास की सुविधा भी प्रदान की। इस टीम ने राज्य क विभिन्न विश्वविद्यालयों में डीआईआईआर कर्मचारियों के साथ उनकी प्रस्तुतियों के दौरान जागरुकता अभियान के प्रभाव को मजबूत किया। यह साझेदारी भारत में तिब्बती मुद्दों के लिए समर्थन के बढ़ते नेटवर्क को उजागर करती है और अंतर-सांस्कृतिक समझ और संवाद को बढ़ावा देने में स्थानीय संगठनों की प्रभावशीलता को रेखांकित करती है।

वडोदरा (३० सितंबर)

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (एमएसयू) (३० सितंबर): यहां पर 'मिडिल वे पॉलिसी आउटरीच' कार्यक्रम में २० तिब्बती छात्रों ने हिस्सा लिया।

पारुल यूनिवर्सिटी (०१ अक्तूबर) : ६५ भारतीय छात्र और शिक्षक शामिल हुए।

राजकोट (०३ अक्तूबर):

श्रीमती कंसागर कॉलेज में २३५ छात्राएं और २७ अन्य लोग शामिल।

वीवीपी इंजीनियरिंग कॉलेज: २५० प्रोफेसर, तकनीकी और शैक्षणिक कर्मचारी और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की भागीदारी रही।

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय: ६५ छात्र और शिक्षक शामिल हुए।

जूनागढ़ (०४ अक्तूबर):

वाणिज्य और विधि कॉलेज: १२० छात्राएं और २२ संकाय सदस्य आए।
भक्त नरसिंह मेहता विश्वविद्यालय: १५८ छात्र और २० संकाय सदस्य पहुंचे।
जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय: कुलपति के साथ बैठक हुई।

मीडिया कवरेज और प्रभाव की व्यापकता

गुजरात के राजकोट और जूनागढ़ में 'तिब्बत जागरुकता वार्ता' शृंखला ने महत्वपूर्ण गुजराती समाचार पत्रों का ध्यान प्रमुखता से आकर्षित किया। इससे अभियान के प्रचार में काफी वृद्धि हुई। अकिला न्यूज और गुजरात समाचार जैसे प्रमुख अखबारों ने इन कार्यक्रमों का व्यापक कवरेज किया, जिससे तिब्बत का मुद्दा क्षेत्र में सार्वजनिक चर्चा में सबसे आगे आ गया। अपने व्यापक पाठक वर्ग और प्रभाव रखने के लिए जाने जाने वाले इन समाचार पत्रों ने गुजरात भर के विशाल पाठक वर्ग तक

वार्ता के बारे में जानकारी प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक स्थानीय समाचार पत्र ने भी तिब्बत जागरुकता वार्ता और वाराणसी में तिब्बत संग्रहालय प्रदर्शनी को कवर और प्रकाशित किया। इसमें न केवल अभियान के प्रमुख संदेशों को उजागर किया गया बल्कि तिब्बत की सांस्कृतिक विरासत और वर्तमान चुनौतियों में रुचि जगाने का भी काम किया गया।

इन समाचार पत्रों की लोकप्रियता और व्यापक प्रसार को देखते हुए, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मीडिया कवरेज ने तिब्बत जागरुकता संदेश के संपर्क में आने वाले लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि की है, जो विश्वविद्यालय की वार्ता में प्रत्यक्ष प्रतिभागियों से कहीं अधिक है। मीडिया के माध्यम से मुद्दे का यह विस्तारीकरण तिब्बत से संबंधित मुद्दों पर सार्वजनिक बहस को अधिक सूचनात्मक और लोगों के जुड़ाव को बढ़ावा देने में सहायक रहा है।

उत्साहजनक प्रतिक्रिया और जुड़ाव

वाराणसी और गुजरात के विश्वविद्यालयों में तिब्बत जागरुकता वार्ता शृंखला को अत्यधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। इस अभियान की सफलता को इन शब्दों में रेखांकित किया जा सकता है कि यह अपने संदेश को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सफल रहा। पूरे सत्र के दौरान भारतीय छात्रों और संकाय सदस्यों ने उल्लेखनीय उत्साह दिखाया और वक्ताओं से विचारोत्तेजक प्रश्न कर उन्हें इसका उत्तर देने के लिए प्रेरित किया। ये प्रश्नोत्तर तिब्बत की संस्कृति, इतिहास और बिगड़ती वर्तमान स्थिति में गहरी रुचि से संबंधित थे। वार्ता ने जीवंत चर्चाओं को जन्म दिया, जिसमें उपस्थित लोगों ने भारत-तिब्बत संबंधों के विभिन्न पहलुओं और तिब्बत के अंदर तिब्बती लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों की गंभीरता के बारे में जिज्ञासा व्यक्त की। वाराणसी के केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान से लेकर गुजरात के सौराष्ट्र विश्वविद्यालय तक अभियान में शामिल किए गए सभी संस्थानों में लगातार उत्साहपूर्ण स्वागत, जागरुकता और भारतीय छात्रों और शिक्षाविदों के बीच एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने में वार्ता की प्रभावशीलता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वक्ताओं ने कहा कि यह व्यापक जुड़ाव और समर्थन उनकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक है, जो जागरुकता अभियान के महत्व और समयबद्धता को पुष्ट करता है।

◆ १२. नागपुर में तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक

१४ अक्तूबर, २०२४

नागपुर। ११ अक्तूबर २०२४ को दोपहर ०३ बजे नागपुर शहर के लोहिया अध्ययन केंद्र में तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक हुई। मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में समता सैनिक दल के राष्ट्रीय संयोजक अशोक बोंडाडे, भारत-तिब्बत मैत्री संघ, नागपुर के अध्यक्ष अमृत बंसोड़, आईटीएफएस नागपुर के संदेश मेश्राम, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के सह-संयोजक श्री अरविंद निकोसे, भारत-तिब्बत सहयोग मूवमेंट के अध्यक्ष श्री राजकुमार केवल रमानी, भंडारा स्थित तिब्बती सेटलमेंट के अधिकारी कर्मा लोडो सांग्पो और आईटीसीओ की कार्यवाहक समन्वयक ताशी देकि शामिल रहीं। बैठक में विभिन्न संगठनों (आरटीडब्ल्यूए, आरटीवाईसी, पासांग, नागपुर तिब्बती मार्केट कमेटी) और तिब्बती मुद्दे के व्यक्तिगत समर्थकों का प्रतिनिधित्व करने वाले ४० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

तिब्बत समर्थक समूहों के बीच समन्वय को बेहतर बनाने और अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों के सातवें सम्मेलन के दौरान निर्धारित कार्य योजना पर आगे बढ़ने के लिए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया (सीजीटीसी-आई) और आईटीसीओ ने संयुक्त रूप से बैठक आयोजित की। भविष्य में सहयोग को बढ़ावा देने और क्षेत्र में समन्वय को मजबूत करने के लिए कई अन्य समर्थक समूहों को निमंत्रण दिया गया।

आईटीसीओ की ओर से उसकी कार्यकारी समन्वयक ताशी देकि ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और बैठक के उद्देश्यों को रेखांकित किया। उन्होंने तिब्बत की वर्तमान स्थिति और तिब्बती मुक्ति साधना में विकास पर एक अद्यतन जानकारी प्रदान की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों के सातवें सम्मेलन में अपनाए गए प्रमुख प्रस्तावों और कार्ययोजनाओं की समीक्षा की और सदस्यों से उनके कार्यान्वयन के लिए निर्णायक कदम उठाने का आग्रह किया।

बैठक में पिछले कुछ महीनों में तिब्बत समर्थक समूहों द्वारा आयोजित हाल की गतिविधियों की समीक्षा भी की गईं, जिसके बाद अखिल भारतीय सातवें सम्मेलन की कार्ययोजना के साथ आगामी पहलों पर चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने आने वाले वर्षों में तिब्बती आंदोलन को मजबूत करने और पूरे क्षेत्र में समन्वय में सुधार करने के उद्देश्य से बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएं दीं। बैठक से निकले प्रमुख परिणामों में से एक यह निर्णय था कि परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के लिए कार्यक्रम आयोजित करने हेतु एक समिति का गठन किया जाएगा।

◆ १३.भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने समता सैनिक दल शिविर में तिब्बत पर जागरुकता सत्र का आयोजन किया

१४ अक्तूबर, २०२४

नागपुर, महाराष्ट्र। बुद्धभूमि, कामती रोड, नागपुर के पास मयूर लॉन एंड हॉल में आयोजित समता सैनिक दल शिविर में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम का सफलतापूर्वक शुभारंभ किया गया। यह कार्यक्रम सी.एन. वासनिक, सुनील सारिपुत्त और अशोक बोंडाडे के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की कार्यवाहक समन्वयक ताशी देकि ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

शिविर में दिल्ली, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, बिहार, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और केरल के दलों के साथ-साथ महिला रेजिमेंट की सदस्यों सहित पूरे भारत के मार्शलों ने भाग लिया।

जागरुकता सत्र के दौरान ताशी देकि ने तिब्बत के महत्व और भारत के लिए इसकी प्रासंगिकता पर विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने तिब्बत की संप्रभुता के बारे में भी बताया और तिब्बत में चल रहे मानवाधिकार उल्लंघन के बारे में जागरुकता फैलाई। प्रस्तुति को वीडियो क्लिप, फोटोग्राफ, सांख्यिकीय डेटा और मानचित्रों सहित दृश्य तत्वों के साथ और भी बेहतर बनाया गया, जिसने दर्शकों को सक्रिय रूप से जोड़े रखा। शिविर में भाग लेने वाले सैकड़ों बच्चों और कई मार्शलों ने पूरे सत्र के दौरान गहरी दिलचस्पी दिखाई। कार्यक्रम ने तिब्बत की दुर्दशा के बारे में जागरुकता फैलाने और लोगों की समझ को मजबूत करने के लिए एक सार्थक मंच के रूप में कार्य किया और इस को सरलता से स्पष्ट किया कि तिब्बत भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

◆ १४. टीपा कलाकारों ने २५वें हिमाचल प्रदेश वन क्रीड़ा एवं ड्यूटी सम्मेलन तथा कांगड़ा जिला कार्निवल में प्रस्तुति दी

तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान की रिपोर्ट, ०४ अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। 'हिमाचल प्रदेश वन क्रीड़ा एवं ड्यूटी मीट' की २५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में धर्मशाला स्थित मुख्य वन संरक्षक कार्यालय ने तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टीआईपीए) के कलाकारों को २९ सितंबर से ०१ अक्तूबर, २०२४ तक आयोजित उद्घाटन एवं समापन समारोह में प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया। इस प्रदर्शन में संस्थान के कलात्मक निदेशक के नेतृत्व में तिब्बती लोक नृत्यों का चयन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं स्थानीय लोगों के साथ मुख्य अतिथि हिमाचल राज्य वानिकी विभाग के सीपीएस अधिकारी सुरेंद्र सिंह ठाकुर थे।

इसी समय, कांगड़ा जिला प्रशासन ने राज्य की सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाने तथा जिले में पर्यटकों के मनोरंजन के लिए कांगड़ा कार्निवल का बड़े पैमाने पर आयोजन किया।

टीपा कलाकारों ने उद्घाटन समारोह में २८ सितंबर को और फिर ०१ अक्तूबर की शाम को प्रसिद्ध भारतीय कलाकारों और स्थानीय कलाकारों के साथ मंच साझा करते हुए सांस्कृतिक प्रदर्शन किए। कार्यक्रमों में हजारों दर्शकों ने भाग लिया और पूरे उत्साह के साथ कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

प्रदर्शनों में हजारों दर्शक शामिल हुए और जोश से जयकारे लगाए। उपस्थित लोगों में जिला प्रशासन के अधिकारी, स्थानीय निवासी और आने वाले पर्यटक शामिल थे। निर्वासित तिब्बती प्रशासन के मुख्यालय के पास आयोजित इन कार्यक्रमों ने तिब्बत की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने का अवसर प्रदान किया, साथ ही हिमाचल प्रदेश सरकार और राज्य में निवास कर रहे तिब्बती समुदाय के बीच घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा दिया।

◆ १५. ताइपे स्थित तिब्बत कार्यालय के सचिव ने २०२४ इस्ट एशिया डेमोक्रेसी फोरम में भाग लिया

१७ अक्तूबर, २०२४

ताइपे। १६ अक्तूबर २०२४ को ताइपे स्थित तिब्बत कार्यालय के सचिव मिग्युर यूडन ने ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी द्वारा आयोजित २०२४ पूर्वी एशिया लोकतंत्र फोरम (इस्ट एशिया डेमोक्रेसी फोरम) में भाग लिया। फोरम ने आज लोकतंत्रों के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों को उजागर किया और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ाने में सक्रिय नागरिक समाज की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

चीन गणराज्य (ताइवान) की संसद युआन के अध्यक्ष माननीय हान कुओ-यू ने फोरम के उद्घाटन सत्र में मुख्य भाषण दिया, जिसके बाद अन्य प्रतिष्ठित वक्ताओं ने अपने संबोधन दिए। वक्ताओं ने सामूहिक रूप से अधिनायकवादी तानाशाहों द्वारा सत्ता के दुरुपयोग के बारे में अपनी चिंताएं व्यक्त कीं, जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय के भीतर अस्थिरता पैदा करता है।

फोरम बैठक से इतर सचिव मिग्युर यूडॉन ने संसद युआन के अंतरराष्ट्रीय मामलों के निदेशक, युआन अध्यक्ष कार्यालय के अधिकारियों और विभिन्न विद्वानों सहित उल्लेखनीय रूप से उपस्थित लोगों के साथ बातचीत की, ताकि उन्हें तिब्बती मुद्दे के बारे में जानकारी दी जा सके और उनका समर्थन हासिल किया जा सके। ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के अध्यक्ष दाची लियाओ और फाउंडेशन के उपाध्यक्ष येह-चुंग लू के साथ एक विशेष बैठक में सचिव मिग्युर यूडॉन ने वर्षों से ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी द्वारा प्रदान किए गए निरंतर समर्थन और सुविधा के लिए तिब्बत कार्यालय की ओर से अपना आभार व्यक्त किया।

ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी ताइवान में एक प्रमुख संस्था है, जो वहां की संसद युआन के अध्यक्ष और ताइवान के विदेश मंत्री के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण में काम करती है।

◆ १६. बेंगलुरु में 'भारत-तिब्बत संबंध और भविष्य की चर्चा' पर संगोष्ठी आयोजित

२१ अक्तूबर, २०२४

बेंगलुरु। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) द्वारा एम.एस. रामैया यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज, सेंटर फॉर नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज (सीएनएसएस) और दलाई लामा इंस्टीट्यूट ऑफ हायर स्टडीज के सहयोग से १९ अक्तूबर २०२४ को रामैया विश्वविद्यालय में 'भारत-तिब्बत संबंध और भविष्य की चर्चा' शीर्षक से एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में दो पैनल चर्चाओं में भारत-तिब्बत संबंधों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों की गहन जांच की गई और भारत-तिब्बत संबंधों पर चर्चा को जारी रखने और मजबूत करने के महत्व पर चर्चा की गई।

संगोष्ठी में सभागार पैनलिस्टों, प्रतिष्ठित अतिथियों, एम.एस. रामैया विश्वविद्यालय के छात्रों और संकाय सदस्यों, वी-टैग दक्षिण भारत प्रशिक्षण के प्रतिभागियों, दलाई लामा उच्च अध्ययन संस्थान और मेन-त्से-खांग के छात्रों और शिक्षकों, बेंगलुरु के आसपास के विभिन्न विश्वविद्यालयों के तिब्बती और भारतीय छात्रों और बेंगलुरु के विभिन्न संगठनों के लोगों से भरा था।

संगोष्ठी की शुरुआत सुबह के उद्घाटन सत्र के साथ हुई, जिसमें विकास और नवीकरण का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक पौधे को प्रतीकात्मक रूप से पानी डाला गया। विशेष अतिथि पी.एम. हेब्लिकर, सीएनएसएस के सदस्य, और मेजर जनरल जेवी प्रसाद, सीएनएसएस के निदेशक ने सीटीए के डीआईआईआर के उप सचिव दुख्तेन क्यी के साथ एक पौधे को पानी देने के कार्यक्रम में भाग लिया। दुख्तेन क्यी ने स्वागत भाषण दिया, जहां उन्होंने एम.एस. रामैया को उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। इसके बाद दुख्तेन क्यी ने मुख्य वक्ता और सीएनएसएस निदेशक को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

उद्घाटन सत्र के बाद, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी के पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बी.एम. चेंगप्पा की अध्यक्षता में पहले सत्र में भारत-तिब्बत संबंधों के ऐतिहासिक महत्व की पड़ताल की गई। शिव नाडार इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर हिमालयन स्टडीज के प्रतिष्ठित फेलो क्लाउड अर्पी, दलाई लामा इंस्टीट्यूट फॉर हायर एजुकेशन में नियमित अध्ययन के डीन न्गावांग ग्यात्सो और भारतीय सेना में आर्टिलरी के पूर्व महानिदेशक और आईआईटी मद्रास में प्रोफेसर लेफ्टिनेंट जनरल पी.आर. शंकर सहित कई प्रतिष्ठित वक्ताओं ने तिब्बत के साथ भारत के प्राचीन आध्यात्मिक संबंधों, १९५० से पहले की संधियों और समझौतों और भारत-चीन संबंधों पर तिब्बत के प्रभाव पर चर्चा की। पैनल ने भारत-तिब्बत सीमा विवाद की जटिल गतिशीलता और इसके भू-राजनीतिक प्रभावों की जांच की।

दोपहर के सत्र में सेमिनार का फोकस 'तिब्बती प्रश्न का भविष्य: भारत की भूमिका' पर केंद्रित हो गया। सीएनएसएस में भारतीय सामरिक अध्ययन कार्यक्रम के प्रमुख बालसुब्रमण्यम सी. और सीटीए में तिब्बत नीति संस्थान के शोध फेलो डेचन पाल्मो ने भारत की कूटनीतिक जिम्मेदारियों, चीन के साथ संबंधों को संतुलित करने की रणनीतियों, तिब्बती प्रवासियों की भूमिका और भारत और चीन के बीच भू-राजनीतिक तनाव तथा ब्रह्मपुत्र नदी पर उनकी जल राजनीति पर गहन चर्चा की। वक्ताओं ने तिब्बत की राजनीतिक स्थिति के भविष्य और तिब्बती पठार पर पर्यावरणीय गिरावट पर भी विचार-विमर्श किया। सीएनएसएस के निदेशक मेजर जनरल जेवी प्रसाद ने समापन भाषण देते हुए तिब्बतियों को अपने अभियान में सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

---

१७. १५ देशों ने जारी अपने संयुक्त वक्तव्य में चीन से तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान में मानवाधिकारों के हनन पर ध्यान देने की मांग की

२४ अक्तूबर, २०२४

२२ अक्टूबर २०२४ को ऑस्ट्रेलिया के राजदूत और संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधि जेम्स मैटिन लार्सन ने १५ देशों के गठबंधन की ओर से

एक संयुक्त वक्तव्य दिया, जिसमें पूर्वी तुर्किस्तान और तिब्बत में गंभीर मानवाधिकार उल्लंघन पर गंभीर चिंता व्यक्त की गई और चीन से तत्काल कार्रवाई करने का आह्वान किया गया। यह वक्तव्य संयुक्त राष्ट्र महासभा की तीसरी समिति के ७९वें सत्र में मानवाधिकारों पर सामान्य चर्चा के दौरान प्रस्तुत किया गया।

कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आइसलैंड, जापान, लिथुआनिया, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, इंग्लैंड, अमेरिका सहित १४ अन्य देशों का प्रतिनिधित्व करते हुए ऑस्ट्रेलिया के राजदूत लार्सन ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय (ओएचसीएचआर) और संयुक्त राष्ट्र के अन्य निकायों द्वारा एकत्र किए गए साक्ष्य के आधार पर गंभीर चिंताओं को उजागर किया। ये निष्कर्ष पूर्वी तुर्किस्तान में उग्यूरों और मुख्य रूप से मुस्लिमों समेत अन्य अल्पसंख्यकों को बड़े पैमाने पर मनमाने ढंग से हिरासत में लिए जाने, परिवारों को अलग करने, जबरन गायब करने, जबरन मजदूरी कराने और व्यवस्थित दमन की ओर इशारा करते हैं। दो साल पहले जारी किए गए इस आकलन में इन उल्लंघनों को संभावित रूप से मानवता के खिलाफ अपराध के रूप में वर्णित किया गया था।

बयान में तिब्बत में मानवाधिकारों के हनन पर बढ़ती चिंताओं को भी रेखांकित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार तंत्र ने राजनीतिक विचारों की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए मनमाने ढंग से हिरासत में लिए जाने, यात्रा पर प्रतिबंध, जबरन मजदूरी कराने, बोर्डिंग स्कूलों में बच्चों को परिवारों से जबरन अलग करने और तिब्बत में सांस्कृतिक, शैक्षिक और धार्मिक अधिकारों और स्वतंत्रता के क्षरण का विस्तृत विवरण दिया गया है।

राजदूत लार्सन ने कहा कि पारदर्शिता के लिए बार-बार अंतरराष्ट्रीय आह्वान के बावजूद चीन ने इन चिंताओं को खारिज कर दिया है और जुलाई २०२४ में अपने सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा के दौरान ओएचसीएचआर के आकलन को 'अवैध और निरर्थक' करार दिया है। अगस्त २०२४ के ओएचसीएचआर के बयान के अनुसार, चीन ने अभी तक झिंझियांग में अपनी नीतियों की व्यापक मानवाधिकार समीक्षा नहीं की है, क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद निरोध पर इसके समस्याग्रस्त कानूनी ढांचे में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

१५ देशों ने चीन से अपने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दायित्वों को बनाए रखने और ओएचसीएचआर और संयुक्त राष्ट्र के अन्य निकायों की सिफारिशों को पूरी तरह से लागू करने का आह्वान किया। इनमें पूर्वी तुर्किस्तान और तिब्बत दोनों में मनमाने ढंग से हिरासत में लिए गए लोगों की तत्काल रिहाई और लापता व्यक्तियों के भविष्य के बारे में पूरी पारदर्शिता दिखाना शामिल है। इसके अतिरिक्त, देशों ने चीन से इन क्षेत्रों में मानवाधिकारों की स्थिति का आकलन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सहित स्वतंत्र पर्यवेक्षकों को बेरोकटोक पहुंच की अनुमति देने का आग्रह किया।

हालांकि संयुक्त बयान का समापन करते हुए राजदूत लार्सन ने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी देश का मानवाधिकार रिकॉर्ड सही नहीं है, लेकिन सभी देशों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के प्रति जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। गठबंधन ने दुनिया भर में मानवाधिकारों की रक्षा और संवर्धन में सामूहिक वैश्विक जिम्मेदारी का आग्रह किया।

संयुक्त वक्तव्य चीन द्वारा उसके अपने क्षेत्रों में मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोपों को उजागर करने के लिए चल रहे अंतरराष्ट्रीय दबाव को भी दर्शाता है, जो संयुक्त राष्ट्र में वैश्विक कूटनीति में एक महत्वपूर्ण घटना को इंगित करता है।

◆ १८. चीनी संपर्क अधिकारी सांगये क्याब ने बर्लिन में चीन के लोकतंत्रीकरण पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया

२८ अक्तूबर, २०२४, तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

बर्लिन। जिनेवा स्थित तिब्बत ब्यूरो में चीनी संपर्क अधिकारी सांगये क्याब ने जर्मनी के बर्लिन में 'साइनो-यूरो वॉयस' द्वारा आयोजित 'चीन में अत्याचार के खिलाफ ताइवान, हांगकांग, तिब्बत, उग्यूगर, मंगोलिया और आंतरिक मंगोलिया के लोगों के संयुक्त सम्मेलन' में भाग लिया।

इसका आयोजन चीन डेमोक्रेसी पार्टी के ब्रिटेन स्थित मुख्यालय, फेडरेशन फॉर ए डेमोक्रेटिक चाइना, ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी और डेमोक्रेसी पार्टी ऑफ चाइना द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

सम्मेलन के उद्घाटन में जर्मनी में ताइवान के प्रतिनिधि डॉ. झाई-वे शीह ने उद्घाटन भाषण दिया और चीन में सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देने के लिए प्रतिनिधित्व करने वाले समुदायों के बीच एकता और सहयोग के महत्व पर जोर दिया। प्रतिनिधि ने ताइवान जलडमरूमध्य में पीआरसी की बढ़ती आक्रामकता के मद्देनजर ताइवान के प्रति उनकी एकजुटता और समर्थन के लिए तिब्बती, मंगोल और उग्यूगर समुदायों के प्रति आभार व्यक्त किया। उद्घाटन समारोह के दौरान अपने संबोधन में चीनी संपर्क अधिकारी सांगये क्याब ने सीपीसी के राजनीतिक दमन से पीड़ित लोगों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में परम पावन १४वें दलाई लामा के अपार योगदान और समझदारी पूर्ण मार्गदर्शन का स्मरण किया। साथ ही इस सम्मेलन में 'व्हाइट पेपर मूवमेंट' के प्रतिनिधि को शामिल करने में हुई चूक के लिए अपनी निराशा व्यक्त की।

सम्मेलन में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के ७५ साल के शासन पर विचार-विमर्श

के दौरान, सांगये क्याब ने तिब्बत में ७५ साल के दमन का विस्तृत विवरण दिया और इस अवधि को चार अलग-अलग चरणों में विभाजित किया। उन्होंने कहा कि चीनी सरकार ने हिंसक आक्रमण के बाद १९४९ से १९६५ तक तिब्बत में प्रमुख राजनीतिक अभियान शुरू किए। इसके बाद कुख्यात सांस्कृतिक क्रांति हुई, जो १९६६ से १९७६ तक चली। क्याब ने १९८० से २०१२ तक तिब्बत में बड़े पैमाने पर चीनी मूल की आबादी के आगमन को बढ़ावा देने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के चीनीकरण कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला, जो दमन के तीसरे चरण को चिह्नित करता है। इसके कारण खासकर २००८ के अखिल तिब्बत विरोध के बाद अनेक तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया। उन्होंने शी जिनपिंग के शासन के तहत वर्तमान अवधि को चौथे चरण के रूप में वर्गीकृत किया। इसमें सरकार की नीतियों की विशेषता, विशेष रूप से औपनिवेशिक शैली के बोर्डिंग स्कूलों में १० लाख से अधिक तिब्बती बच्चों के जबरन प्रवेश के माध्यम से तिब्बती पहचान को मिटाना थी।

सम्मेलन के वर्चुअल टॉक सत्र के दौरान ताइवान स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि केलसांग ग्यालत्सेन ने एक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने जोर दिया कि तिब्बत के मुद्दे पर अंतरराष्ट्रीय चर्चा और ध्यान अभी भी कम नहीं हुआ है, जैसा कि कई लोग गलत समझते हैं। इसके मद्देनजर, उन्होंने अमेरिका में हाल ही में पारित किए गए रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट के बारे में विस्तार से बताया।

सम्मेलन में तिब्बत, दक्षिणी मंगोलिया, पूर्वी तुर्किस्तान, हांगकांग, ताइवान और चीनी लोकतंत्र समर्थक कार्यकर्ता समूहों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

एक दिन बाद, २५ अक्तूबर को सुबह १०:३० बजे सम्मेलन के प्रतिभागियों ने बर्लिन में चीनी दूतावास के सामने विरोध-प्रदर्शन किया।

◆ १९. तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी कुंचोक मिग्मार ने टोंग-लेन हेल्थ बस सेवा के उद्घाटन के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू का स्वागत किया

३० अक्तूबर, २०२४

धर्मशाला। धर्मशाला के तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी कुंचोक मिग्मार ने २९ अक्तूबर २०२४ को सर्किट हाउस में टोंग-लेन हेल्थ बस के उद्घाटन के दौरान हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू का औपचारिक स्वागत किया।

मुख्यमंत्री के साथ बातचीत के दौरान कुंचोक मिग्मार ने आधी सदी से भी अधिक समय से तिब्बती समुदाय, विशेष रूप से धर्मशाला में रहने वालों के समर्थन के लिए राज्य सरकार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

तिब्बती लोगों की ओर से दिए जानेवाले प्रशंसा को उजागर करने के लिए उन्होंने एक मार्मिक कहानी सुनाई। कहानी का सार इस प्रकार है- एक युवा भारतीय लड़की जिसने महज चार साल की उम्र में मैक्लियोडगंज की सड़कों पर भीख मांगना शुरू कर दिया था। उसे एक दयालु तिब्बती भिक्षु ने गोद लिया, जिसने सुनिश्चित किया कि उसे टोंग-लेन चैरिटी स्कूल में शिक्षा मिले। कड़ी मेहनत और समर्पण के द्वारा इस लड़की ने हाल ही में अपनी एमबीबीएस पूरी की है। इससे पता चलता है कि उस लड़की को मिले सहयोग ने न केवल उसके जीवन को बदल दिया, बल्कि भारतीय समाज को वापस देने के लिए तिब्बतियों की प्रतिबद्धता की झलक भी इस कहानी से मिलती है।

◆ २०. सीआरओ सावांग फुंट्सोक ने दिवाली की शुभकामनाएं देने के लिए शिमला में प्रमुख सरकारी कार्यालयों का शिष्टाचार दौरा किया

३१ अक्तूबर, २०२४

शिमला। शिमला के मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय ने मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी सावांग फुंट्सोक के नेतृत्व में दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं देने के लिए राजभवन, मुख्यमंत्री आवास, सचिवालय और जिला आयुक्त और पुलिस अधीक्षक के कार्यालयों का शिष्टाचार दौरा किया।

इन औपचारिक यात्राओं के दौरान, मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी सावांग फुंट्सोक ने माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू सहित राज्य के कई प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की। तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में नियुक्त राज्यपाल के सचिव श्री सीपी वर्मा और अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन) श्री कमलेश कुमार पंत को भी अपनी शुभकामनाएं दीं।

२१. तिब्बत, भिक्षु को वीचैट पर दलाई लामा की शिक्षाएं साझा करने पर १८ महीने की सजा

०४ अक्तूबर, २०२४

ज़ियांगबा क्यूपेई को जिस 'संवेदनशील जानकारी का खुलासा करने' के लिए दंडित किया गया था,

वास्तव में वह परम पावन के विचार हैं।
लोपसांग गुरुंग

पिछले सप्ताह, रेबगाँग (चीनी : टोंगरेन) के ज़ियांगबा क्यूपेई नामक एक तिब्बती भिक्षु के रिश्तेदारों ने बताया कि क्यूपेई को पिछले साल अगस्त में १८ महीने की जेल की सजा सुनाई गई थी। परिवार को पहले से न तो मुकदमे की जानकारी दी गई थी और न ही फैसले की। रेबगाँग ऐतिहासिक तिब्बत का हिस्सा है, हालांकि चीनियों ने इसे किंघई प्रांत में तथाकथित हुआंगनान तिब्बती स्वायत्त प्रान्त की राजधानी बना दिया था।

भिक्षु का 'अपराध' इतना ही था कि उन्होंने वी चैट मोमेंट पर दलाई लामा की शिक्षाओं को साझा किया था। वह वर्तमान में किंगहाई की राजधानी शिनिंग शहर में हिरासत में है।

ज़ियांगबा क्यूपेई को तिब्बत के विद्रोह की सालगिरह १० मार्च को कथित तौर पर 'संवेदनशील जानकारी साझा करने' के आरोप में मार्च के मध्य में उनके मठ से गिरफ्तार किया गया था। यह कथित 'संवेदनशील सूचनाएं' वास्तव में परम पावन द्वारा दी गई शिक्षाएं थीं।

रेबगाँग २२ मार्च से जेल में बंद थे। उन्हें अगस्त में १८ महीने की सजा सुनाई गई और २२ सितंबर को सजा की अवधि पूरी करने के लिए शिनिंग ले जाया गया। उनकी गिरफ्तारी और अभियोजन के बारे में न केवल चीनी अधिकारियों ने उनके परिवार को सूचित नहीं किया, बल्कि उल्टे अधिकारियों ने उनकी स्थिति के बारे में पूछताछ करने पर उन्हें धमकी भी दी। वॉयस ऑफ तिब्बत ने उनको सुनाई गई सजा की खबर सबसे पहले दी थी, जिसकी अब पुष्टि हो गई है।

◆ २२. चीनी न्यायालय ने ल्हासा पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो के खिलाफ तिब्बती अधिकार कार्यकर्ता गोन्पो क्यी के मुकदमे को खारिज कर दिया

२१ अक्तूबर, २०२४, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और मानवाधिकार डेस्क, तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन, डीआईआईआर की रिपोर्ट

धर्मशाला। चीनी सरकार द्वारा आजीवन कारावास की सजा से नवाजे गए तिब्बती उद्यमी दोरजे ताशी की बहन गोन्पो क्यी ने ल्हासा चेंगगुआन जिला पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो ल्हासा पर इस साल मार्च की शुरुआत में मुकदमा दायर किया था। यह मुकदमा उन्होंने तिब्बत में एक शांतिपूर्ण याचिका दायर करने के आरोप में पिछले साल दिसंबर में १० दिनों की प्रशासनिक हिरासत में रखने के खिलाफ दायर की थी। एक विश्वसनीय सूत्र का कहना है कि ल्हासा चेंगगुआन जिला पीपुल्स कोर्ट ने इस साल जून के अंत में उनके सभी दावों को खारिज कर दिया।

गोन्पो की और उनके पति चोएकयोंग जनवरी २०२३ से लगातार कई बार तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र उच्चतर जन न्यायालय के सामने अपने भाई के साथ हुए अन्याय के खिलाफ याचिका दायर कर रहे हैं। इन याचिकाओं में मांग की गई है कि अधिकारी दोरजे ताशी के मामले की फिर से जांच करें और उन्हें दोरजे ताशी से मिलने की अनुमति दें जिन्हें १५ वर्षों से अधिक समय से हिरासत में रखा गया है। तिब्बत से मिले एक वीडियो में गोन्पो की तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र उच्चतर जन न्यायालय के सामने लेटी हुई दिखाई दे रही हैं, उनके हाथ में 'दोरजे ताशी दोषी नहीं हैं', 'तिब्बत उच्च न्यायालय ने कानून को गलत ठहराया है' जैसे नारे लिखे बैनर और शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन में शी जिनपिंग की तस्वीर है। उन्होंने अनुरोध किया है कि दोरजे ताशी के वकील केस फाइल की समीक्षा करें और अदालत त्रुटि सुधार प्रक्रिया को फिर से शुरू करे।

ल्हासा म्यूनिसिपल पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो के चेंगगुआन जिला पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो ने ल्हासा में याचिका गतिविधियों के दौरान कई बार गोन्पो की को जबरन घसीट कर बाहर फेंका है। पिछले दिसंबर में चेंगगुआन जिला सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो ने 'इकाई के आदेश को बाधित करने' के लिए गोन्पो क्यी को १० दिनों के लिए हिरासत में लिया और याचिका बैनर और संबंधित वस्तुओं को जब्त कर लिया।

नतीजतन, गोन्पो क्यी ने अपने अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए चेंगगुआन जिला सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो के खिलाफ इस साल की शुरुआत में ल्हासा शहर में चेंगगुआन जिला पीपुल्स कोर्ट में मुकदमा दायर किया। उसने अनुरोध किया कि अदालत ल्हासा शहर के चेंगगुआन जिला सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो द्वारा उसके खिलाफ अवैध रूप से लगाए गए प्रशासनिक दंड को रद्द कर दे और उसके खिलाफ 'प्रशासनिक दंड निर्णय' को रद्द कर दिया जाए। सरकारी मानकों के अनुसार, प्रतिवादी को १०-दिवसीय हिरासत के दौरान वादी को हुए आर्थिक नुकसान के लिए मुआवजा देने का आदेश दिया गया था। इसके अतिरिक्त, याचिका से संबंधित बैनर और व्यक्तिगत सामान भी जब्त कर लिया गया।

ल्हासा चेंगगुआन जिला पीपुल्स कोर्ट ने इस साल २७ जून को मामले की सुनवाई की और एक कॉलेजियम पैनल ने आश्चर्यजनक रूप से और पूर्वाग्रह से फैसला सुनाया कि गोन्पो क्यी ने 'यूनिट के आदेश को बाधित किया', जिसने कानूनों के अनुसार प्रशासनिक जुर्माना लगाने के लिए सुरक्षा ब्यूरो को अधिकृत किया। इसके अलावा, जब्त की गई वस्तुओं की वापसी के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया।

इसके अलावा, अदालत ने फैसला सुनाया कि गोन्पो क्यी के प्रशासनिक मुआवजे के अनुरोध में तथ्यात्मक और कानूनी आधार का अभाव था और उनका अवैध व्यवहार कानून द्वारा संरक्षित नहीं था। इसलिए

प्रतिवादी यानी सरकार प्रशासनिक मुआवजे के लिए जिम्मेदार नहीं थी और प्रासंगिक चीनी कानूनों के अनुसार गोन्पो क्यी के सभी दावों को खारिज कर दिया।

दोरजे ताशी १५ से अधिक वर्षों से चीनी जेल में बंद है। पिछले कुछ वर्षों में दोरजे ताशी के परिवार के सदस्य उनकी स्वास्थ्य स्थितियों को लेकर बहुत चिंतित रहे हैं। उनके परिवार को जेल में उनसे मिलने से मना कर दिया गया है और उच्च अधिकारियों से अपील भी बेकार साबित हुई है। दोरजे ताशी को शुरू में १० जुलाई २००८ को निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों को दान देने और तिब्बत में तिब्बती प्रदर्शनकारियों को धन मुहैया कराने के संदेह में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें १७ मई २०१० को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

◆ २३भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने तिब्बत पक्षधरता को मजबूत करने के लिए मुंबई में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया

28 अक्तूबर, 2024

मुंबई: केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के एक निकाय- भारत तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ)- ने तिब्बती मुद्दे के साथ ही इसके पक्ष में जनमत तैयार करने और इस मुद्दे के साथ एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, मीडिया, राजनीति और तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्यों को शामिल करते हुए मुंबई में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य तिब्बती मुद्दे के पक्ष में माहौल बनाना और इस मुद्दे के प्रति एकजुटता को मजबूत करना था। इसके लिए शहर भर में कार्यक्रम और बैठकें आयोजित की गईं।

जागरुकता पहल के तहत नवी मुंबई के श्री छत्रपति शिवाजी उच्च विद्यालय में 'तिब्बत के लिए एक दिन' कार्यक्रम आयोजित किया गया। 'भारत के लिए तिब्बत क्यों मायने रखता है' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में प्रिंसिपल श्री कोंगेरे और संकाय सदस्यों के साथ लगभग 70 छात्रों ने भाग लिया। सत्र में मुख्य अतिथि श्री संतोष घरात ने भाग लिया। इस दौरान आईटीसीओ समन्वयक ताशी देकि ने अपने संबोधन में भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भू-राजनीतिक संबंधों को लेकर अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में तिब्बत की रणनीतिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया, जिसमें पर्यावरण संबंधी चिंताएं और तिब्बत के मुद्दे के लिए भारत के समर्थन का महत्व शामिल था। इस कार्यक्रम में छात्रों और शिक्षकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे सत्र अत्यधिक दिलचस्प और जानकारीपूर्ण बन गया।

इसी तरह, तिब्बत पक्षधरता अभियान को लेकर बॉलीवुड निर्माता श्री राज सत्यम और उनके भतीजे अनीश वज्जला के साथ महबूब स्टूडियो में एक और बैठक हुई। आईटीसीओ की समन्वयक ताशी देकि और श्री राज सत्यम ने हिंदी सिनेमा बिरादरी को तिब्बत के बारे में अधिक जागरूक बनाकर और उनके माध्यम से बड़े पैमाने पर लामबंदी करके भारतीय जनता तक पहुंचने के रचनात्मक तरीकों के बारे में चर्चा की।

समन्वयक ताशी देकि ने अभिनेता, फिल्म निर्माता और सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन के प्रस्तोता श्री शशि रंजन से अंधेरी पश्चिम के लोकंदवाला स्थित उनके कार्यालय में मुलाकात की।

राजनीतिक मोर्चे पर चले कार्यक्रमों में, महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के राष्ट्रीय महासचिव श्री संतोष रोहिदास घरात के साथ एक पक्षधरता बैठक आयोजित की गई। श्री घरात ने तिब्बती मुद्दे के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया और राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर जागरुकता बढ़ाने के लिए राजनीतिक पक्ष मजबूत करने के प्रयासों में अपनी भागीदारी का आश्वासन दिया।

समन्वयक ताशी देकि ने मुंबई से कांग्रेस सांसद वर्षा एकनाथ गायकवाड़ से उनके कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की। चर्चा में सांसदों को तिब्बत से संबंधित मुद्दों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। श्रीमती गायकवाड़ ने तिब्बती सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने वाली पहलों का समर्थन करने की इच्छा व्यक्त की, जिससे तिब्बती मुद्दे के लिए मजबूत राजनीतिक समर्थन का संकेत मिलता है। समन्वयक ने मुंबई में तिब्बती शरणार्थी बाजार के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी बात की। इस बैठक के दौरान शहर में तिब्बती स्वेटर विक्रेता समुदाय के प्रतिनिधि भी उनके साथ थे। इस संवाद के दौरान मुंबई में तिब्बती शरणार्थियों की आजीविका और अधिकारों को बनाए रखने के लिए निरंतर समर्थन की आवश्यकता को रेखांकित किया गया।

इस तरह समन्वयक ताशी देकि के नेतृत्व में मुंबई में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम के माध्यम से विविध क्षेत्रों में समर्थन जुटाने में एक महत्वपूर्ण कदम का आगाज हुआ। शैक्षणिक संस्थानों, मीडिया पेशेवरों, राजनीतिक हस्तियों और तिब्बत समर्थक समूहों की भागीदारी से तिब्बत पक्षधरता अभियान को मजबूत करने के लिए सहयोगी प्रयास किया गया।

प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया भविष्य के काग्रक्रमों और साझेदारियों की संभावना को दर्शाती है। इससे आगे कार्यक्रम की गति को बनाए रखने के लिए प्रमुख समर्थकों के साथ आगे निरंतर बैठकें आयोजित करने और मीडिया आउटरीच को बढ़ाने और राजनीतिक पक्षधरता अभियान को चलाते रहने की आवश्यकता होगी। कार्यक्रम ने युवा पीढ़ी के बीच समर्थन को प्रेरित करने के लिए शिक्षा और जागरुकता प्रयासों को आगे बढ़ाते रहन की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Acting Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

तिब्बत जागरूकता सत्र में ध्यानपूर्वक भाग लेते छात्र और मार्शल

सूचना एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग ने एम.एस. रामैया विश्वविद्यालय के सहयोग से "भारत-तिब्बत संबंध और भविष्य की चर्चा" पर संगोष्ठी आयोजित की

आईटीसीओ के समन्वयक ताशी डेकयी, मुंबई में "तिब्बत जागरूकता कार्यक्रम" के बारे में समाचार केंद्र 24/7 से स्थानीय समाचार मीडिया के साथ बातचीत करते हुए, मुंबई प्रेस क्लब में "तिब्बत भारत के लिए क्यों मायने रखता है" विषय पर जानकारी देते हुए।